A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

दिनेश चमोला के काव्य में गीति तत्व का अनुशीलन

Nirmala Rani[1], Rajendra Kumar Sen[2]

1 Research Scholar, Department of Hindi, Central University of Punjab, Bathinda
2 Professor and Head, Department of Hindi, Central University of Punjab, Bathinda

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 15 June, 2026

Bharti, A., Karan, Pandita, V., Raina, V. (2026). natyashastra mein abhinay ki parampara aur siddhant: ek vishleshnatmak Adhyayan. Swar Sindhu, 14(1), 284-291.

सार

मानव जीवन और संगीत का आपस में गहरा संबंध हैI मानव जन्म से लेकर जीवन के अंतिम पड़ाव तक अपने जीवन के सुख और दुःख दोनों अवस्थाओं में संगीत से जुड़ा रहता हैI प्रकृति के प्रति प्रेम और उसका चित्रण, स्व की अनुभूतियों का वर्णन, दूसरों के प्रति अनुराग अथवा शिकायत आदि सभी प्रकार के भावों का विरेचन संगीत के माध्यम से सुगमता से हो जाता हैI इसलिए साहित्य की सभी विधाओं में काव्य को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता हैI काव्य के माध्यम से सब प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति सुगमता और प्रभावी ढंग से हो जाती हैI काव्य में निहित गीति तत्त्व के माध्यम से इसका प्रभाव और महत्त्व दोनों दीर्घकालीन होते हैंI काव्य का दीर्घकालीन प्रभाव इसमें निहित गीति तत्व के कारण ही कायम रहता हैI कविता में छंदों और अलंकारों का प्रयोग साज-सज्जा के लिए नहीं अपितु काव्य की गेयता और रसात्मकता के संवर्धन के लिए होता हैI इसलिए किसी कवि के काव्य को परखने की एक महत्वपूर्ण कसौटी काव्य में निहित गीति तत्त्व का अन्वेषण हैI वर्तमान हिंदी कविता में प्रकृति की गोद में पले-बड़े और विचरण करने वाले डॉ. दिनेश चमौला का काव्य बहुआयामी हैI इनके काव्य में प्रकृति के प्रति संवेदना, मानव मूल्यों की उद्भावना और समकालीन समस्याओं के प्रति चेतना का भाव विद्यमान हैI कवि के काव्य के विषय पक्ष के साथ-साथ इसमें निहिति संगीतात्मकता के मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत शोध पत्र में दिनेश चमौला के काव्य में गीति तत्त्व का विश्लेषण किया गया हैI

***बीजशब्द**: काव्य, गेयता, संगीतात्मकता, वैयक्तिकता, भावप्रवणता, छंद, भाषा, शैली*

प्रस्तावना

मानव अपने मन के भावों और विचारों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता हैI भाषा के विविध रूप भावों और विचारों के अनुरूप प्रयुक्त होते रहते हैंI भाषा के द्वारा ही मानव साहित्य सृजन करता रहा है और साहित्य के माध्यम से अपने भावों और विचारों को विविध प्रकार के उपमानों और प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करता आया हैI साहित्य की विविध विधाओं में काव्य, कथा और नाटक अपना विशेष महत्त्व रखते हैंI नाटक में अभिनियता प्राण तत्त्व है तो कथा में इतिवृत्तात्मकता और कथारस केन्द्रीय बिंदु होते हैं जिनसे कथा सगुंफित होती हैI इसी प्रकार काव्य का जो केन्द्रीय और प्राण तत्त्व माना जा सकता है वह इसमें निहित गीति तत्त्व होते हैंI कविता में गीति तत्त्व का समायोजन कविता की लोकप्रियता और सर्वग्राह्यता को बढ़ाने वाला अंश हैI जब कविता में गेयात्मकता का भाव बढ़ जाता है तब कविता गीत बन जाती हैI शास्त्रीय परंपरा के अनुरूप कविता छंदोबद्ध रचना होती थी, इसके कारण इसमें लय, ताल आदि का संयोजन स्वतः होता है जो संगीतात्मकता का पोषण करता हैI संगीत का मानव के साथ गहरा संबंध स्वीकार किया गया हैI "संगीत से केवल आनंदानुभूति ही नहीं होती ध्वनियाँ मानसिक स्थितियों की भी सूचक होती हैंI साथ ही ये हमारे मनोभावों को भी प्रभावित करती हैंI"[1] गीत काव्य का मुक्तक शैली में रचित एक ऐसा स्वरूप होता है, जिसमें निजी अनुभूतियों अथवा एक भाव दशा का प्रकाशन संगीतमय एवं लयात्मकता के साथ होता हैI इसलिए गीत में स्वरों का प्रयोग और तुकबंदी का बहुत महत्त्व होता हैI काव्य में गेयता के भाव को बढ़ाने के लिए कोमलकांत शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य होता हैI गेयता के लिए छंदबद्ध होना अनिवार्य है क्योंकि छंदमुक्त होने के कारण इनमें गेयता का भाव तिरोहित हो जाता हैI

दिनेश चमौला हिंदी के ऐसे चर्चित कवि हैं जिनके काव्य में विषय वैविध्य के साथ-साथ गेयता का भाव भी प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता हैI 1964 को उत्तराखंड में जन्मे दिनेश चमौला हिंदी के आचार्य एवं अनुवादक होने के साथ-साथ एक रचनाकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैंI साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित दिनेश 'चमौला' कविता, कहानी, उपन्यास, समीक्षा, एकांकी, बाल कहानी, बाल कविता, व्यंग्य,दोहा,लघुकथा,आलोचना, अनुवाद एवं शब्दकोश आदि सभी विधाओं में अपने लेखन कार्य के लिए

विख्यात हैं। इनके काव्य में निम्न-मध्यवर्ग की पारिवारिक स्थिति, नैतिकता और बदलते परिवेश, जीवन की कठोर जटिलताएं, समाज में नारी की दशा, आधुनिक समाज में व्यक्ति की बदलती मानसिकता, घुटन, रिश्तों का बिखराव, आत्महत्या, पलायन, पर्यावरण इत्यादी देखने को मिलता है।

कवि के रूप में दिनेश 'चमौला' की एक अलग और विशिष्ट पहचान हैंI इनके काव्य में जहाँ एक ओर विषय वैविध्य के कारण वर्ण्य विषय में नवीनता है वहीं दूसरी ओर छंद मुक्त और छंद बद्ध दोनों प्रकार की कविता लेखन में दिनेश 'चमौला' अप्रतिम हैI शैली की दृष्टि से इनकी कविताओं में बिंब, प्रतीक, शब्द-चयन और पद विन्यास का वैशिष्ट्य होने के साथ-साथ गीति तत्व का समावेश भरपूर मात्रा में उपलब्ध है जिसके कारण इनकी कविताओं में गेयता का भाव प्रबल रूप धारण किए हुए हैI गीति तत्त्वों (वैयक्तिकता, गेयता, तीव्र भाव-प्रवणता, संक्षिप्तता, कोमलकांत पदावली और आत्माभिव्यंजना आदि) के आधार पर इनकी कविताओं का अनुशीलन निम्नानुसार हैI

वैयक्तिकता

गीति तत्त्वों में वैयक्तिकता प्रमुख तत्त्व है जिसके अंतर्गत कवि अपनी निजी अनुभूतियों और संवेदनाओं को काव्य रूप में प्रस्तुत करता हैI यद्यपि रचनाकार के साहित्य में समाज की अनुभूतियों और संवेदनाओं को ही प्रकट किया जाता है परन्तु फिर भी कवि जब इस प्रकार की अनुभूतियों को पूर्णतः निजी रूप में प्रस्तुत करता है तब कविता में गीत का समावेश होना आरंभ होता हैI दिनेश चमौला की कविता 'विरह का तार भी' वैयक्तिकता की अनुभूति का प्रस्फुटन हैI

गीत भी हूँ गीत की मैं रागिनी भी,
दर्द की चिर दासतां का राज भी हूँ,
वक्त की आसक्त यादों की थपेड़ों
से कटी बेदर्द इस आवाज भी हूँ
दुखिद भी हूँ, हूँ दुखी संसार भी मैं
हर ऋतू त्यौहार की इंतजार भी हूँI
राग भी हूँ मैं विरह का तार भी हूँ
दुखद पीड़ा की गहन झंकार भी हूँI[2]

इस गीत पर महावेदी वर्मा के गीत 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' का प्रभाव कुछ हद तक स्पष्ट दृष्टिगोचर होता हैI छायावाद में व्यक्तिवाद की प्रमुखता देखी जा सकती है I यद्यपि छायावद का अवसान तो प्रगतिवाद के कारण हो गया परन्तु यह व्यक्तिपरकता का भाव हिंदी कविता में ज्यों का त्यों बना रहा और समकालीन कविता में देखा जा सकता हैI दिनेश चमौला की कविता 'अलि विधु सी वह मृदु मुस्कान' व्यक्तिपरकता का सुंदर उदहारण है:

भावातिरेक हो डस जाती थी
तेरी वह करुणा की तान
तब से ही यूं मान लिया था
तुझे जीवन का संचित ज्ञान
प्रेयसि तेरे प्रेम मिलन में
किन्तु ये कैसे हैं व्यवधान ?
अलि विधु सी वह मृदु मुस्कानI[3]

गेयता

गीत के लिए गेयता का लक्षण परमावश्यक होता हैI किसी कविता में गेयता का भाव ही कविता को गीत में बदल देता है I काव्य के संबंध में शिल्प को लेकर बहुत चर्चा होती हैI "काव्य कौशल से तात्पर्य रचना के अभिव्यक्ति कौशल से हैI शिल्प का शाब्दिक अर्थ है 'अभ्यास पूर्वक वस्तु विशेष को रचने की पद्धति' वस्तुत:कविता सृजन की प्रक्रिया स्वत:अद्भुत होती हैI कवि मानस चयन करता है,पुनव्यवस्था करता है और और चयन तथा पुनव्यवस्था में कला-दृष्टि ही कार्य करती है I शिल्प को ध्यान में रखकर कवि कविता नहीं लिखता और शिल्प न ही ओढने की वस्तु है तो काव्य में शिल्प अपने आप आता है अभिव्यक्ति की कौशल में वह सहज रूप से आता है I काव्य कला का वास्तविक स्वरूप कवि के मन का सौन्दर्य -बोध है और उस सौन्दर्य -बोध को कला माध्यमों द्वारा उसे वैसा रूप देने में ही उसकी सार्थकता है I आधुनिक संदर्भ में कविता के बहिरंग से सबंधित कौशल को काव्य कला का नाम दिया जाता हैI फलत: काव्यानुभूति के स्थिरीकरण के लिए जिन उपकरणों का उपयोग होता है वही शिल्प हैI"[4] काव्य का शिल्प विधान गेयता में कहीं बाधक नहीं होता हैI गेयता के लिए आवश्यक है कि कुछ शब्दों की पुनरावृत्ति हो I प्रत्येक दूसरी अथवा तीसरी पंक्ति का शब्द मिलता जुलता और उसमें दीर्घ स्वर हो तभी गेयता का भाव प्रस्फुटित होता हैI चमौला की कविता 'आ ओ मेघा' में यह तत्त्व प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है I इस कविता में आ ओ मेघा, जा ओ मेघा तथा गा ओ मेघा के रूप में देखा जा सकता है I

घुमड़-घुमड़ कर
आ ओ मेघा
मधुर प्रेम का ले संदेशा
दूर प्रान्त को जा ओ मेघा !
दूर देश सीमा पर रहते
बनकर मेरे प्रियतम प्रहरी
वीर रागिनी गा ओ मेघा !
जा ओ मेघा !!
जा ओ मेघा !! [5]

इसी प्रकार इनकी कविता 'जो प्रिय की पाती आती' में देखा जाए तो 'ती' शब्द की पुर्नावृत्ति प्रत्येक दूसरी पंक्ति में इसी गेयता को संवर्धित करती है I जैसे खो जाती, छा जाती, इठलाती, पाती आती इन शब्दों के माध्यम से गेयता का भाव निहित है I

नित वसंत के सांध्य गगन में
कोकिल गाकर खो जाती
अलि गुंजन करते जा उड़ते
नभ में सौरभ छा जाती
चंदा चकोर सा मैं नर्तन
करती फूलों सा इठलाती
जो प्रिय की पाती आती I[6]

भाव प्रवणता

किसी भी कविता को गीत बनने के लिए उसमें भाव प्रवणता का प्रचुर भाव होना बहुत जरूरी हो जाता है I डॉ.रामकुमार वर्मा कहते है, "भाषा भावों की वाहिका है I इसलिए जिन भावों का स्पष्टीकरण भाषा को करना है, उनका स्पष्ट और प्रभावशाली प्रयोग भाषा पर ही अवलम्बित हैI भावों के साथ ही साथ भाषा के प्रयोग में भो अधिक से अधिक सौन्दर्यगत अनुपात रखना आवश्यक हो जाता हैI"[7] गीत के लिए जहाँ शब्दों का

चयन और गुम्फन आवश्यक है, वहीं शब्दों में उचित भावों का होना आवश्यक है और भाव की तीव्रता जितनी अधिक होगी गीत उतना ही अधिक प्रभावशाली हो सकेगा I चमौला की कविता 'सखी ! वे भीने-भीने बोल' में भावों की यह प्रवणता स्पष्ट दृष्टि गोचर होती हैI

बचपन के सुकुमार गात का

कौन चुका पाएगा मोल

अलिवृन्दों के मधुमय गुंजन

सा करते कलरव कपोल

सखी ! वे भीने-भीने बोल I8

भाव प्रवणता के लिए केवल शब्द ही नहीं अपितु विषय भी बहुत महत्वपूर्ण होता है I जब कवि किसी ऐतिहासिक अथवा पौराणिक प्रसंग का वर्णन करता है अथवा किसी महान विभूति का वर्णन करने लगता है तब शब्दों में अलंकारों का स्वतः संयोजन होना शुरू हो जाता है I भारत को मुगलों के आतंक से मुक्त करवाने वाले और जन मानस में गर्व, गौरव, उत्साह, सम्मान और वीरता के भाव के पोषक गुरु गोबिंद सिंह जी के लिए चमौला की कविता 'धन्य धन्य दशमेश पिता' में यह भाव प्रवणता दिखाई देती है I

धन्य भूमि पटना की पावन, जहं पिता दशमेश अवतरित हुए !

धन्य चरण गुरु तेग बहादुर, जिन देश प्रेम हित प्राण दिए !!

धन्य कोख वह अमिय कलश सी धन्य स्वर्ग वह भूमि अपार

धन्य गूजरी धन्य सकल रज, जहाँ लिया गोबिंद अवतार I9

देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त करवाने के लिए जन-जन को जागृत करने वाले युग पुरुष और राष्ट्र नायक महात्मा गाँधी को नमन करने के लिए जब कवि अपनी कलम उठाते हैं तब उनके व्यक्तित्व के अनुरूप शब्दों में भाव प्रवणता स्वतः समाहित हो जाती है I चमौला की कविता 'हे राष्ट्र पिता तुझको प्रणाम' इस भाव प्रवणता का उदहारण है:

हे युग नायक हे राष्ट्र पिता तुझको प्रणाम !

हे भारत मां के श्रवण पुत्र तुझको प्रणाम !!

हे सत्यव्रती हे प्रेम अहिंसा के पूजक I

हे युग निर्माता धन्य तुम्हारी जीवन गाथा

हे राष्ट्र दूत हे आजादी के अमर दीप,

हे परम सन्त हे महानिधे शत-शत प्रणाम !!10

संक्षिप्तता

कविता और गीत में मूल अंतर इसके आकार को लेकर होता है I कविता जहाँ कवि के मन और भाव के अनुरूप छोटी, सामान्य, लंबी और बहुत लंबी भी हो सकती है परन्तु गीत के लिए इसका संक्षिप्त होना बहुत आवश्यक हैI संक्षिप्तता (Brevity) गीत की मुख्य विशेषताओं में से एक होती हैI गीत में मनोरंजन के लिए भाव के साथ-साथ विचार को संवाहित करने, उद्देश्य को लक्षित करने के लिए रचनाकार के पास सीमित समय होता है क्योंकि यदि गीत बहुत अधिक लंबा होने पर इसका भाव खंडित हूँ जाता है, इसलिए गीत का तीन अथवा चार पदों में होना आदर्श माना जाता है I क्योंकि अधिक लंबा होने पर एकान्विति का भाव भी तिरोहित हो जाता है I चमौला की कविता में यह आदर्श देखा जा सकता है I इनकी कविता 'अलि, गाता जब बीते राग' इसका उदाहरण है:

बीते वैभव की कभी बात

कह जाता कोई खग अज्ञात

झर-झर आंखों से अश्रु हास

गिरते विरह के ले उच्छवास

तन जाते ममता के तार

अलि, गाता जब बीते राग I11

कोमलकांत पदावली

गीत के लिए कोमलकांत पदावली का होना नितांत आवश्यक हैI रीति सिधांत अंतर्गत वैदर्भी रीति में जिस कोमलकांत पदावली का उल्लेख किया जाता है वही गीति का प्राण तत्त्व है I कविता में यदि कोमलकांत पदावली का अधिक प्रयोग होगा तो उसी शब्द की मसृणता गीत का रूप धारण कर लेती है I गीत के लिए सामान्यतः कोमलकांत पदावली और उसमें अनुप्रास अलंकार कविता में गेयता को पोषण प्रदान करते हैं I चमौला की 'ठिठुरन' कविता इसका उदहारण है:

माघ की

पहली-पहली ठिठुरन

ठुमक-ठुमक कर

शैल शिखर पर

ढक-ढक कर कानन हिम आंगन

गांव खेत-खलिहान सभी को

पल में आच्छादित करते घन

माघ की

पहली-पहली ठिठुरन I12

कोमलकांत पदावली के साथ-साथ कवि पर्यायवाची शब्दों प्रयोग करके भी काव्य को अधिक रमणीयता प्रदान करता है I इसी प्रकार की कोमलकांत पदावली का एक अन्य उदाहरण उनकी कविता 'वह तारों की स्वप्निल रात' में भी देखा जा सकता हैI

नील व्योम के शून्य अंक में

मिला जब पहला-पहला साथ

तुहिन कणों सी आ पहुंची थी

मधुमय स्वप्नों की बारात

तव भीगे नयनों से किसने

अश्रु मिटाये थे जलजात ?

वह तारों की स्वप्निल रात I13

आत्माभिव्यंजना

गीत के लिए आत्माभिव्यंजना का विशेष महत्त्व होता हैI गीत का सृजन सामूहिक अथवा सामाजिक अभिव्यक्ति के लिए नहीं होता अपितु आत्माभिव्यक्ति के लिए अधिक होता है I कवि अपनी निजता को सामूहिकता में समर्पित कर देता है और यह सामूहिकता निजता होकर भी निजता का भान नहीं होने देतीI कवि चमौला ने अपनी कविताओं में आत्माभिव्यंजना का यह भाव विशिष्ट रूप से द्योतित होता हैI इनकी कविता 'जंगली गुलाब' में इसका उदाहरण देखा जा सकता है जहाँ कवि प्रसून के लिए अपनी संवेदना व्यक्त करता है:

मैं रहा देखता भाव विभोर

नर्गिस गुलाब को ओर-पोर

भाता था मुझको अमलतास

लेता जब वह था मृदु उछ्वास I14

कवि अपने जीवन की व्यक्तिगत अनुभूति को प्रमुखता से प्रकट करता है जो 'गीत' शीर्षक में देखा जा सकता हैI यहाँ कवि अपनी प्रेमानुभूति को आदर्श रूप में प्रस्तुत करता हुआ कहता हैI

प्रिय तुम्हारी चाह में, कितने मधुर सपने संजोये,

कितने दुखद मधुमास काटे, ग्रीष्म व हेमंत खोयेI15

अस्तित्व का प्रश्न हिंदी कवियों की कविता में दार्शनिकता का पुट गहराता हैI भक्तिकालीन कविता के उपरांत इस प्रकार की दार्शनिकता छायवादी कवियों की कविता में देखने को मिलती है और इसी की स्पष्ट छाप कवि चमौला की कविता 'क्यों न स्नेह हो तुमसे हे प्रिय' में देखी जा सकती हैI

अस्तित्व हीन लघु मन में मेरे

आया था जब पहला प्लावन

मधुर तुम्हारे परिचय के क्षण

भाये ज्यों मेघों की सावन

भूला मैं जीवन की था सुध

जब तुमने जीता था मृदु हिय

क्यों न स्नेह हो तुमसे हे प्रिय !16

बिंब-विधान- गीत में बिंब का अपना अलग महत्त्व होता हैI बिंब विधान तभी संभव होता है जब कवि की भाषा में चित्रात्मकता का गुण विद्यमान होता हैI "बिम्ब का विकास छायावादी कविता से प्रारंभ होता है यों तो प्रत्येक युग की कविता में बिम्ब विद्यमान हैं किन्तु पाश्चात्य अवधारणा का प्रभाव बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से माना जा सकता हैI पाश्चात्य देशों में बिम्बवाद के नाम से कव्यादोंलन ही चल पड़ा थाI इसके समर्थकों में डी.एच.लारेंस, करोल विलियम्स,एजरा पाउंड आदि विचारक प्रमुखI पाउंड ने इसकी परिभाषा करते हुए लिखा है'बिम्ब बुद्धि और भावना विषयक पुरे जटिल तंत्र को क्षण मात्र में प्रस्तुत कर देता हैI"17 बिंब द्वारा जहाँ एक ओर कविता में गहरा भाव निहित होता है वहीं दूसरी ओर कविता में प्रेषणता का भाव अधिक प्रगाढ़ होने लगता हैI कवि चमौला के काव्य में बहुत सुंदर बिम्बों का सृजन हुआ हैI उनकी कविता 'याद आता है बचपन भोला' का बिंब विधान दृष्टव्य हैI

शैल शिलाओं की गोदी में

जी-जी भर हंसना गाना

कभी सीढ़ियों से खेतों में

ग्वाल-बाल बनकर जाना

भोले ग्वाल-बाल पशुओं से

नित लड़ना और झगड़ना

बीती सभी बहार ऐसी

ज्यों सांध्य सूर्य का गोला

याद आता है बचपन भोला I18

प्रतीक योजना

कविता में प्रतीकों का संतुलित प्रयोग इसकी प्रभावोत्पादकता को बढ़ाने में श्रेयष्कर होता हैI प्रतीकों के द्वारा कवि अपनी बात को जन समुदाय तक गहरे अर्थ में संप्रेषित कर सकता हैI उचित प्रतीकों के प्रयोग से कविता में गेयता के तत्त्वों को पोषण प्राप्त होता हैI हिंदी के छायावादी कवियों ने अपनी कविताओं में उचित प्रतीकों का प्रयोग किया जिसके परिणामस्वरुप महादेवी वर्मा, निराला, प्रसाद और पन्त की कविताओं में गेयता विद्यमान हुई ‘’भाव प्रकाशन के निमित्त मनोनुकूल छंद-विधान प्रस्तुत कियाI इस समय परंपरा से प्राप्त प्राचीन छंदों का बहुत कम व्यवहार हुआI लय को गीतियों का आधार माना गया और नवीन छंदों की सृष्टि द्वारा इस क्षेत्र में विविधता और अनेकरूपता का श्री गणेश हुआI”19

वर्तमान में इसी यह प्रवृत्ति दिनेश चमौला के काव्य में भी देखी जा सकती है I इनकी कविता ‘हे आली ! आ गई बैशाखी’ सुंदर प्रतीक योजना है,

उगता जिस देश में सोना

विष उसमें नहीं बोने देंगे

प्रेम एकता मैत्री भाव से

खण्डित देश नहीं होने देंगे

जाग सखी ! आ गई बैशाखी I20

इसी प्रकार ‘बही जब पहली-पहली वात’ कविता में भी सुंदर प्रतीक योजना निहित हैI

कभी अलि गाता भीने मन से

स्नेहसिक्त हो स्वप्निल राग

नील व्योम में छा जाती थी

कभी मिलन सी मंद बयार

याद आज भी विगत सुखों की

रजत रश्मि सी स्नेहिल बात

बही जब पहली-पहली वात I21

वर्तमान दौर में जब कविता हृदय से अधिक बुद्धि की उपज बनती जा रही है, जिस कारण इसमें भावों की प्रवाहमायता बाधित हो रही हैI इस संबंध में मुक्तिबोध का कथन है, “आज की नयी कविता के भीतर, जो मनोविज्ञानिक प्रक्रिया लक्षित होती है, वह नि:संदेह छायावादी या प्रगतिवादी अथवा उसके पूर्व की काव्य-प्रक्रिया से बिलकुल भिन्न हैI रोमांटिक कवियों की भांति आवेशयुक्त होकर, आज का कवि भावों के अनायास, स्वछंद, अप्रतिहत प्रवाह में नहीं बहताI इसके विपरीत वह इन प्रतिक्रियाओं को ही व्यक्त करता हैI”22 परन्तु इस स्थिति में चमौला एक अपवाद के रूप में देखे जा सकते हैं जिनकी कविताओं में भाव और बुद्धि का अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलता हैI इनका बुद्धि तत्त्व कहीं भी काव्य के भाव पक्ष पर हावी नहीं अपितु उसका सहचर दिखाई देता हैI

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि गीत कविता का एक ऐसा रूप होता है जो स्मरण की दृष्टि से बहुत सरल होता है जिसे पाठक आसानी से स्मृति में रख सकता है और जिसका प्रभाव दीर्घकाल तक रहता है I जहाँ कविता हृदय और मस्तिष्क का समन्वय होता है जिसमें मस्तिष्क का अंश अधिक होता है परन्तु गीत में हृदय अधिक प्रभावी होता हैI कविता को गीत में परिवर्तित किया जा सकता है जिसके लिए कुछ महत्वपूर्ण तत्त्व होते हैं जिनके द्वारा कविता गीत की काया धारण कर लेती हैI दिनेश चमौला आज के दौर के ऐसे सहृदय कवि हैं जिनके काव्य में वैयक्तिकता, भावप्रवणता, गेयता, कोमलकांत पदावली, आत्मभिव्यन्जा से लेकर बिंब और प्रतीक योजना तक सभी गीति तत्त्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैंI

सन्दर्भ

1. वसंत, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, 2023, पृष्ठ 25
2. दिनेश चमौला, यादों के खण्डहर, अलका प्रकाशन, पटियाला, 1989, पृष्ठ 89
3. वही, पृष्ठ 91
4. प्रकाश भगवान शिंदे, सुमित्रानंदन पंत का काव्य-शिल्प, प्राग प्रकाशन, कानपुर, 2012, पृष्ठ 95
5. दिनेश चमौला, यादों के खण्डहर, अलका प्रकाशन, पटियाला, 1989, पृष्ठ 15
6. वही, पृष्ठ 97
7. महेन्द्र कुमार सिंह, आधुनिक काव्य चेतना का विकास, आयुष्मान पब्लिकेशन हाउस
8. नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ-220
9. दिनेश चमौला, यादों के खण्डहर, अलका प्रकाशन, पटियाला, 1989, पृष्ठ 105
10. वही, पृष्ठ 23
11. वही, पृष्ठ 19
12. वही, पृष्ठ 82
13. वही, पृष्ठ 35
14. वही, पृष्ठ 94
15. वही, पृष्ठ 48
16. वही, पृष्ठ 83
17. वही, पृष्ठ 88
18. डॉ.करुणा उमरे, हिंदी कविता:भाषा और शिल्प:विविध प्रतिमान, अमन प्रकाशन, 2012 , पृष्ठ 108/
19. दिनेश चमौला, यादों के खण्डहर, अलका प्रकाशन, पटियाला, 1989, पृष्ठ 26
20. डॉ. केशरी नारायण शुक्ल, आधुनिक हिंदी काव्यधारा, सरस्वती मंदिर, बनारस, पृष्ठ 104
21. दिनेश चमौला, यादों के खण्डहर, अलका प्रकाशन, पटियाला, 1989, पृष्ठ 25
22. वही, पृष्ठ 95
23. गजानन माधव मुक्तिबोध, नयी कविता का आत्मसंघर्ष, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2018, पृष्ठ- 29